४०१/२२५

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - ७ जून, २००९)

(समय : सुबह ९:०० से ११:१५)

सत्संग प्रवेश - १

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : नीलकंठ चरित्र - द्वितीय संस्करण, फरवरी - २००७

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''यहाँ योगी-यति के रहने का कोई स्थान है क्या ?'' (४१)
२. ''आपके सद्‌भाग्य हैं की आपको इनके दर्शन हुए हैं ।'' (१०५)
३. ''बालक होकर ब्रह्मांड को ललकार रहा है ?'' (६५)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. बुधेज गाँव में सभी ने सोचा की अवश्य ये अलौकिक बालयोगी थे । (७२)
२. सर्दी के दिनो में बदरीनाथ की चलमूर्ति को जोषीमठ में स्थापित की जाती है । (१३)
३. लालजी सुतार ने लोजपुर का रास्ता पकड़ लिया । (१०२)

प्र.३ ''महादत्त राजा के महल में ।'' (२८) **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. लोज गाँव की कन्याएँ क्यों डरकर पीछे हट जातीं थी ? (९६)
२. धवलगिरि और श्यामगिरि के बीच की खाई में नीलकंठवर्णी के पास कौन आया ? (२३)
३. नीलकंठवर्णी ने रणबहादुर को किस प्रकार रोग सहन करने के लिए समझाया ? (३२)
४. नैमिषारण्य की क्या महिमा है ? (६)
५. रथयात्रा के उत्सव में जगन्नाथपुरी के राजा और लोगों ने क्या किया ? (४९)

प्र.५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. नीलकंठवर्णी के बाये चरण में कौन से चिह्न थे ? (६०)
   (१) ☐ जामुन (२) ☐ कलश (३) ☐ मीन (४) ☐ केतू
२. वनविचरण के समय पर कौन कौन से देवता नीलकंठवर्णी के दर्शन के लिए आये थे ? (२५, २, ६४)
   (१) ☐ सूर्य (२) ☐ हनुमानजी (३) ☐ इन्द्र (४) ☐ शिवजी

प्र.६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । [४]

१. नीलकंठवर्णी ने मुक्तानंद स्वामी से कहा, 'इस दीवाल में यह जो गोखा है, वह ..... में छिद्र जरूर करेगा ।' (९४)
२. मोहनदास को ..... में मोह था । (२७)
३. ..... ने पुत्री का विवाह मुकुंददेव के पुत्र से तोड़ दिया । (५४)
४. सभी योगी प्रतिदिन ..... से नई-नई चीजें निकालकर नीलकंठवर्णी को खिलाते थे । (२२)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग-१ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''रुठकर भक्ति करना अच्छा नहीं, ऐसी भक्ति, ऐसा प्रेम चिरंजीवी नहीं होता ।'' (२९)
२. ''वे इतने तेजस्वी हैं कि उनको देखने मात्र से यह निश्चय हो जाता है कि वास्तव में वे भगवान ही हैं ।'' (३६)
३. ''मेरे मन की यह झंझट आप ही को निपटानी है ।'' (२)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [४]

१. जोबनपगी को देखकर कशियाभाई को आश्चर्य हुआ । (४०)
२. शास्त्रीजी महाराज ने आशाभाई को गले लगाया । (६३)

प्र.९ ''झीणाभाई का आध्यात्मिक जीवन ।'' (२७) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [४]

१. झीणाभाई ने पुत्र हठीसिंह की सिफ़ारिश श्रीजीमहाराज से क्यों नहीं की ? (३२)
२. प्रभु ने लालुबा को क्या दिया ? (१)
३. श्रीजीमहाराज डभाण के किन तीनों की प्रशंसा करते थे ? (२३)
४. जीवुबा ने अपनी सास राईबाई को विनम्र भाव से क्या कहा ? (४४)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर परीक्षा दी है।
निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महिना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहीं होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विषय के सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । **[६]**

विषय : सद्‌गुरु देवानंद स्वामी । (१५)

१. श्रीजीमहाराज ने उन्हें दोनों चरणों में सोलह दिव्य चिह्नों के दर्शन करवाये । **२.** देवानन्द स्वामी के कीर्तन सुनकर दलपतराम उनके शिष्य बने । **३.** जोती हुई बेलगाड़ी के जुए पर बैठे बैठे ही उन्होंने दलिया और दूध खाना आरम्भ कर दिया । **४.** सं. १९२५ मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी के दिन उन्होंने वड़ताल में शरीर छोड़ा । **५.** श्रीजीमहाराज ने उनको संन्यास की दीक्षा देकर 'दंडी देवानन्द' नाम धारण करवाया । **६.** प्रेमानन्द स्वामी, ब्रह्मानन्द स्वामी, मुक्तानन्द स्वामी, आदि सन्तों के साथ देवानन्द स्वामी भी श्रीजीमहाराज की अष्ट कवियों की मण्डली में विराजमान हो गये । **७.** उनका जन्म सिरोही तहसील के खाण गाँव में हुआ था । **८.** देवीदानजी को शिवजी ने साक्षात् दर्शन देकर वरदान दिया था । **९.** ब्रह्मानन्द स्वामी के पास रहकर पिंगलशास्त्र एवं गानविद्या सीखने लगे । **१०.** उनका कीर्तन सुनकर श्रीजीमहाराज ने वचनामृत लोया पाँचवे में उनकी प्रशंसा की । **११.** ब्रह्मानन्द स्वामी के अक्षरवास के बाद देवानन्द स्वामी मूली मन्दिर के महन्त पद पर नियुक्त हुए । **१२.** अभ्यास के बाद भुज में ग्रंथ की रचना की ।

केवल सही क्रमांक	☐	☐	☐	☐	☐	☐	**सभी उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे ।**
यथार्थ घटनाक्रम	☐	☐	☐	☐	☐	☐	**घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।**

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[४]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

१. **सद्. ब्रह्मानन्द स्वामी :** लाडुदानजी ने वतन वापस लौटते समय रास्ते में नागडका में विप्र शंकराचार्य के पास रहकर पिंगलशास्त्र एवं गानविद्या की शिक्षा प्राप्त की । (१)

२. **सद्. देवानन्द स्वामी :** सन् १८९०, आषाढ़ शुक्ला दशमी के दिन देवानन्द स्वामी ने मेराई नामक भक्त से कहा, 'मैं कल धाम में जानेवाला हूँ, मेरे लिए रथ तैयार रखना ।' (१५)

३. **स्वामी निर्गुणदासजी :** जेठाभाई सं. १८५६ के श्रावण मास मे भगतजी का दर्शन करने के लिए नाव में बैठकर महुवा जाने के लिए निकले साथ में वडोदरा के शंकरभाई दवे के पुत्र मगनभाई थे । (४९)

४. **सद्. शुकानन्द स्वामी :** इस महान सन्तवर्य की श्रीजीमहाराज ने हरिलीलामृत के पंचाला प्रकरण सातवें में प्रशंसा लिखी है कि, 'ये शुकमुनि बहुत बड़े साधु हैं..... वे स्वरूपानंद स्वामी जैसे ही हैं ।' (२१)

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी <u>एक</u> विषय पर करीब ३० वाक्यों में निबंध लिखिए । **[१०]**

१. आधुनिक मेनेजमेन्ट, आध्यात्मिकता और शास्त्रीजी महाराज ।
२. दिव्य मुखारविंद : भगवान श्री स्वामिनारायण का ।
३. ''तुझ संगे कोई वैष्णव थाये तो तुं वैष्णव साचो ।''

सूचना : उपरोक्त सभी प्रश्नों में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ५ जुलाई, २००९ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।